

राज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 0003

खूनी हवेली का सहस्रय



खूनी हवेली का रहस्य

चित्रांकन: जगदीश पंकज
कथानक: तरुण कुमार
सम्पादक: मनीष चन्द्र 'मुप्त'



ठाकुर वीर सिंह के चार पुत्र थे। तीनों बड़े पुत्र हीरा सिंह, हरनाम सिंह और जसवन्त सिंह अलग-अलग शहरों में अपने व्यवसायों में लीन थे, इन्हें ठाकुर साहब के बनाए नियमों से सख्त जफरत थी। लेकिन मल ही मन वे उनका बेहद सम्मान करते थे। जबकि चौथा पुत्र गिरिराज शहर में डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त करने के बाद कुछ ही दिनों में अपने गांव प्रतापगढ़ पहुंचने वाला था।

एक दिन हवेली के भीतर ठाकुर साहब अपनी बीवी की तन्वीर से बातें कर रहे थे...



नाथा अपना गिरिराज कल हमारे गांव लौट रहा है। अब तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। नाथा अब देखना इस गांव का कोई भी व्यक्ति बीमारी के इलाज के अभाव में नहीं मरेगा।

और तभी...





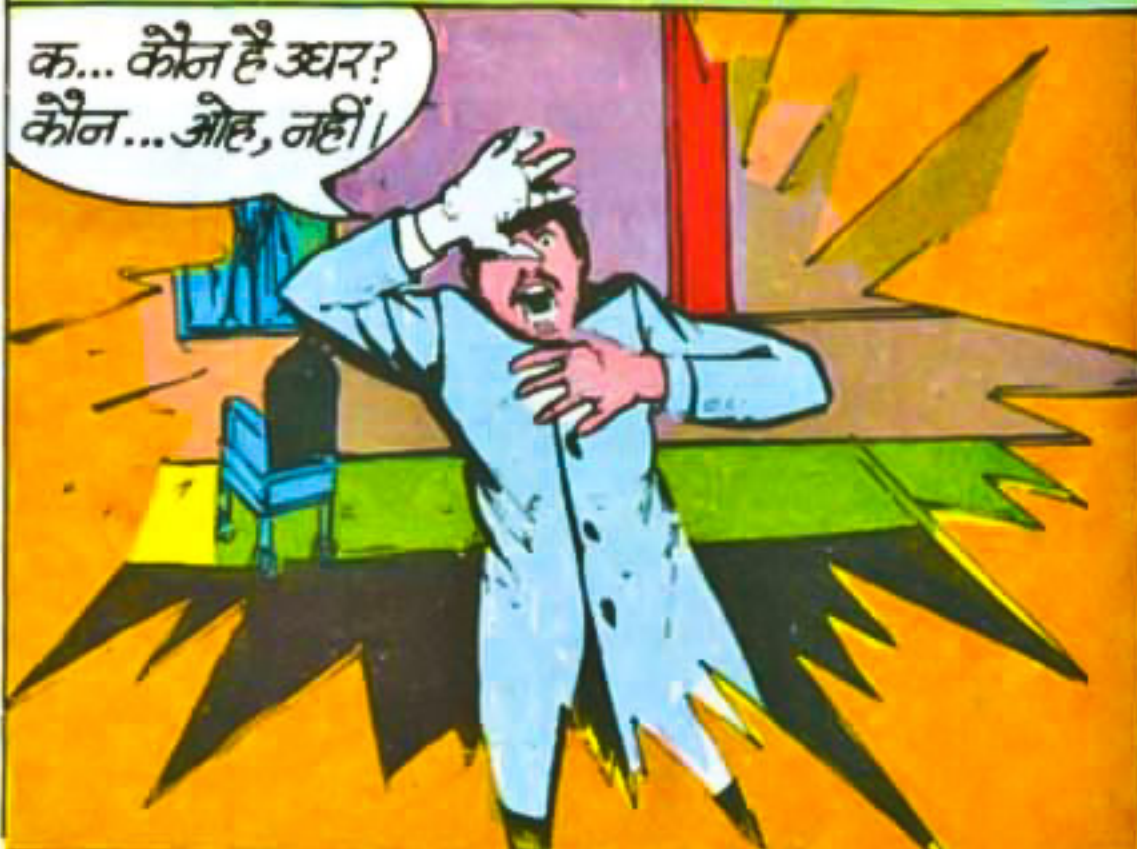
राज कॉमिक्स



अभी वे कुछ समझे भी नहीं थे कि तभी कमरे में स्विचकी का शीशा टूटने की एक जबर्दस्त... आवाज हुई।



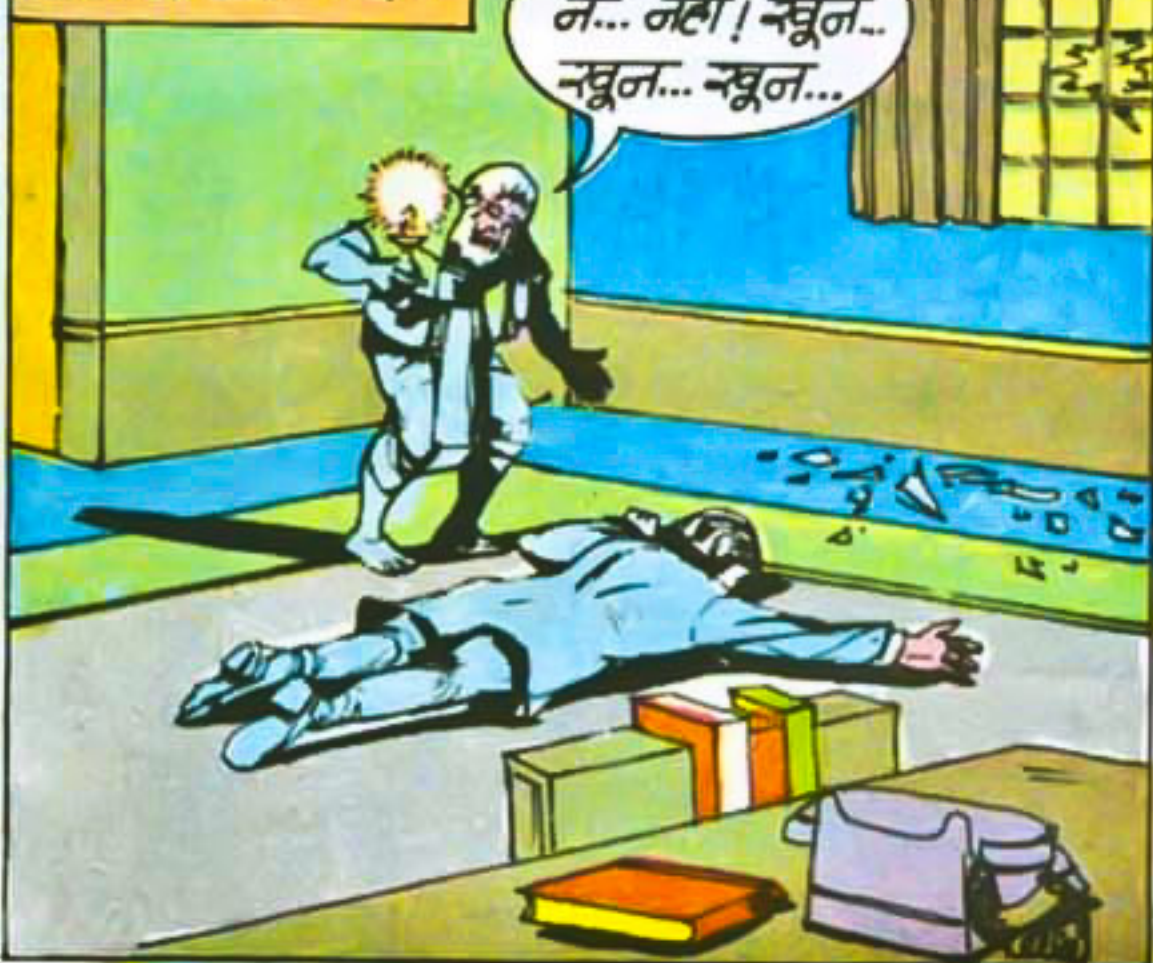
किन्सी अन्जानी आशंका से ठाकुर वीरसिंह जैसे स्वर में चिल्ला उठे।



हवेली का सबसे पुराना रूचं ठाकुर साहब का वफादार नौकर सुन्विया...



सुन्विया शीघ्रता से दरवाजा खोल कर ठाकुर साहब के शयन कक्ष में दानविल हुआ। तभी बिजली आ गई...



वह आता हुआ फोन के करीब पहुंचा और...





खूनी हवेली का रहस्य



कुछ ही देर में पुलिस वहां आ पहुंची।





राज कॉमिक्स



और फिर दूसरे ही दिन ठाकुर साहब के चारों बेटे हवेली पहुंच गए।



आप सब आ गए। बहुत अच्छा हुआ। मेरा तो अकेले में दम घुटा जा रहा था।

लेकिन सुनविया, पिताजी को हुआ क्या था?



क्या बताएं कैटे मालिक! रात मालिक खाना खा कर अपने कमरे में गए ही थे कि बिजली गई और फिर कुछ क्षणों बाद एकदम उनकी चीन्च सुनाई दी...

...चीन्च सुन कर मैं दौड़ा-दौड़ा मालिक के कमरे में गया और फिर बिजली आने पर ठाकुर साहब मुझे मृत अवस्था में जमीन पर पड़े मिले।



सुनविया ने अभी अपनी बात खत्म ही की थी कि तभी कमरे में इन्स्पेक्टर रामन दाखिल हुआ।



आइए इन्स्पेक्टर साहब। कहिये क्या रिपोर्ट है?

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के अनुसार ठाकुर साहब की हत्या गला घोट कर की गई है। लेकिन उनके गले पर आदमी के बजाय शेर के पंजे के निशान मिले हैं।

शेर के पंजे के निशान?

हां, लेकिन आप चिन्ता मत कीजिये। हम कातिल को ढूँढने की पूरी कोशिश करेंगे।



खूनी हवेली का रहस्य

फिर लाश मिलने पर ठाकुर साहब का अन्तिम संस्कार कर दिया गया।



उसके बाद सब उदासी से हवेली लौट आए और रात होते ही अपने-अपने कमरों में चले गए, लेकिन हीरा सिंह की आंखों में नींद नहीं थी...

पिताजी की हत्या के पीछे क्या कारण हो सकता है?



और ठीक उसी क्षण पूरे कमरे में अंधकार छा गया।

ओह! यह अचानक बिजली को क्या हुआ?



मुन्धिया... अरे...
अह... ब... चा... ओ...



हीरा सिंह ने खुद को उस पंजे से छड़ाने की भरपूर कोशिश की, मगर पंजा जोक की तरह उनकी गर्दन पर चिपक चुका था।

आ...ह।

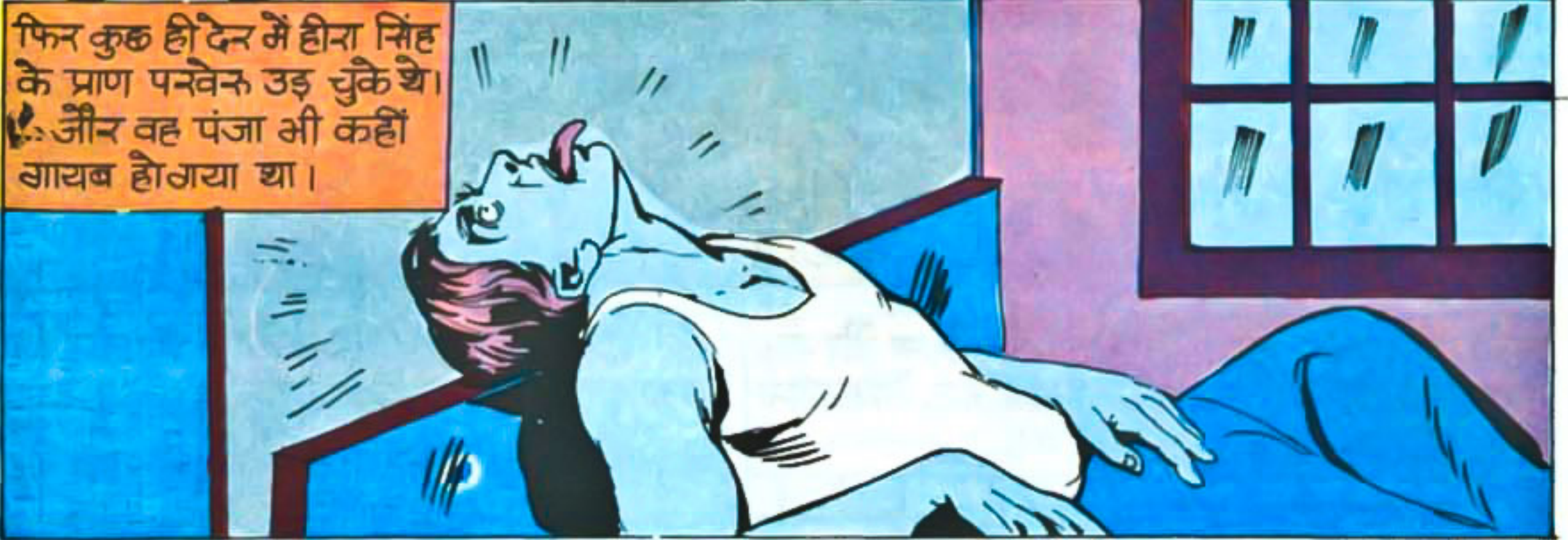




राज कॉमिक्स



फिर कुछ ही देर में हीरा सिंह के प्राण परवरु उड़ चुके थे। और वह पंजा भी कहीं गायब हो गया था।



ठाकुर हीरासिंह की चीखें सुनकर सभी भागकर उनके कमरे के सामने दबकटो हो गए, मगर दरवाजा भीतर से बन्द था।

भइया! दरवाजा खोलो!
यह हम हैं आपके छोटे भई...



जब भीतर से कोई आवाज़ न आई तो जसवन्त शंकित स्वर में बोला-

मुझे कुछ गड़बड़ी लगती है।
हमें दरवाजा तोड़ डालना चाहिए।

तुम ठीक कहते हो जसवन्त...
दरवाजा तोड़ना ही होगा।



और फिर...



दूसरे ही मिनट बाद दरवाजा चौन्कट से अलग हो कर गिर पड़ा।





खूनी हवेली का रहस्य



लेकिन अन्दर पहुँचते ही तीनों सन्न रह गये।





राज कॉमिक्स



फन्द्रह मिनट पश्चात इन्स्पेक्टर वहां मौजूद लाश का सुआचना कर रहा था।



पूरे कमरे का निरीक्षण करने के बाद ...



सुनिश्चया तुम बरसों से ठाकुर वीर सिंह के साथ रहे हो। याद करो, शायद तुम्हें इन हत्याओं का कोई कारण पता हो?





खूनी हवेली का रहस्य



मुखिया के स्वागोश होते ही इन्स्पेक्टर रमण ने हवलदार राम सिंह से कहा...

लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दो और हां आज रात तुम गुप्त रूप से कांस्टेबल कृष्णा के साथ हवेली पर ही पहरा दोगे, अगर कोई खतरे वाली बात दिनवाई दे तो तुरन्त मुझे खबर करना।



ओ.के. सर!

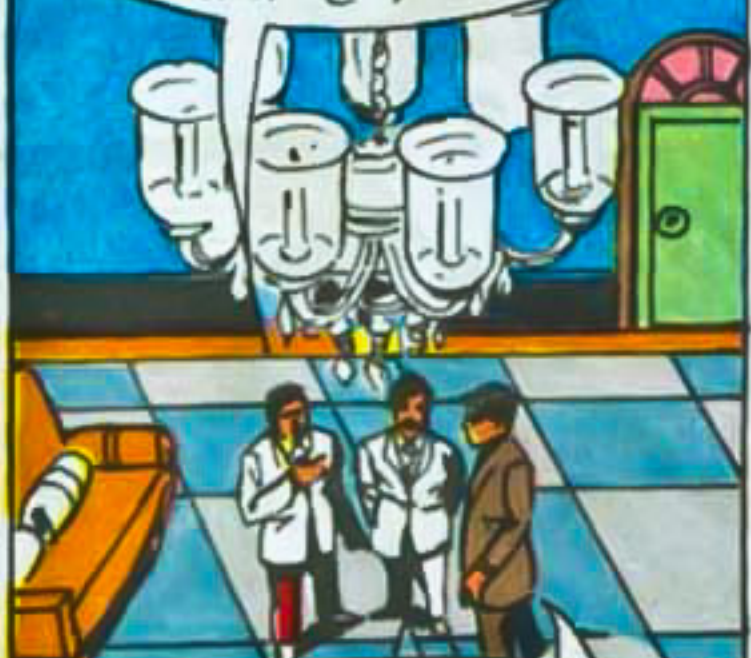


हां भई, तखकी का सवाल है।

अगर आज हत्यामा यहां आया तो हमारे हाथों से बचेगा नहीं।

उधर हवेली के अन्दर हरनाम, जसवन्त एवं गिरिनाराज

पता नहीं, यह क्या हो रहा है हवेली में? पहले पिताजी की हत्या हुई, फिर बड़े भइया की और लगता है जैसे अब मेरी बारी है।



नहीं, मैं अब इस मनहूस हवेली में नहीं रहूंगा। सुबह होते ही मैं वापिस बम्बई लौट जाऊंगा।



अब यहां रहना ही कौन चाहता है? मैं भी कल कलकत्ता चला जाऊंगा।

भइया का दाह संस्कार कौन करेगा?



हम यह कार्य निबटाकर ही यहां से जायेंगे।



राज कॉमिक्स



कुछ ही देर में पूरी हवेली सजाते में डूब गई और ठाकुर हनुमान सिंह के कमरे में एक भयांक हाथ उनकी गर्दन की ओर बढ़ रहा था।



तभी अचानक किन्नी खटके से हनुमान सिंह की नींद खुल गई।



उस रहस्यमय वृद्ध ने हनुमान सिंह को कोई भी मौका नहीं दिया और...



भयांक हत्यारे ने धीरे से हनुमान सिंह को अपने कंधे पर ढाला... और एक ओर चल पड़ा -



ठाकुर जसवंत सिंह का भी बुना हुआ था। उसे क्षण प्रतिक्षण मौत करीब आती दिखाने दे रही थी।



म... मुझे हनुमान भैया के पास चलना चाहिए। शायद डर कुछ कम हो जाय।

जन्मवन्त हन्नाम सिंह के कमरे के बाहर पहुंचा



अन्दर हन्नाम का बिस्तर खाली देख कर वह बुरी तरह उछल पड़ा।



लेकिन जैसे ही वह पीछे मुड़ा, उसके मुंह से एक भयानक चीख निकल आई।



जन्मवन्त भी नहीं बचा, खूनी पंजे ने उसे भी मार मार दिया।



उधर वृक्ष पर बैठे हवलदार राम सिंह और कृष्ण एक तेज चीख की सुन कर चौंक पड़े।



अन्दर ढकड़ी लगाती हैं। चलो कल कर देंगे।



राज कॉमिक्स



चीख सुन कर गिरिराज व सुखिया हरनाम के कमरे की ओर दौड़े, मगार रास्ते में ही वे ठिठक कर रुक गए।



मगार कुछ ही समय बाद वह बदहवास सा भागा चला आया और धुरीतनह हांफते हुए बोला-



वे भागा कर हरनाम सिंह के कमरे में पहुंचे-



राम सिंह और कृष्णा भी वहां आ पहुंचे, वहां के हालात देखते ही उनका माथा ठनका।





बाहर आ कर वे सब हननाम सिंह की तलाश करने लगे। तभी स्कानक सुनिविया चीख उठा।



हननाम सिंह की सूतावन्था में कुंय में लटकता देख गिरिराज सदमे से बेहोश होकर गिर पड़ा।

लाश को कुंय से निकाल कर पुलिस स्पुबुलेंस में भेजने के बाद...





राज कॉमिक्स



बहुत बानीकी ने पूरी हवेली चैक करने के बाद भी उन्हें कोई सबूत हासिल नहीं हुआ।



उधर गिरिराज भी छेश में आ चुका था।



इन्स्पेक्टर रमण भी वहां पहुंचे-





खुनी हवेली का रहस्य



ठीक है मिस्टर गिरिनाराज।
फिलहाल तुम हमारे साथ
चलो। कल तक मैं कोई न
कोई नमस्ता न्योज ही
निका लूंगा।



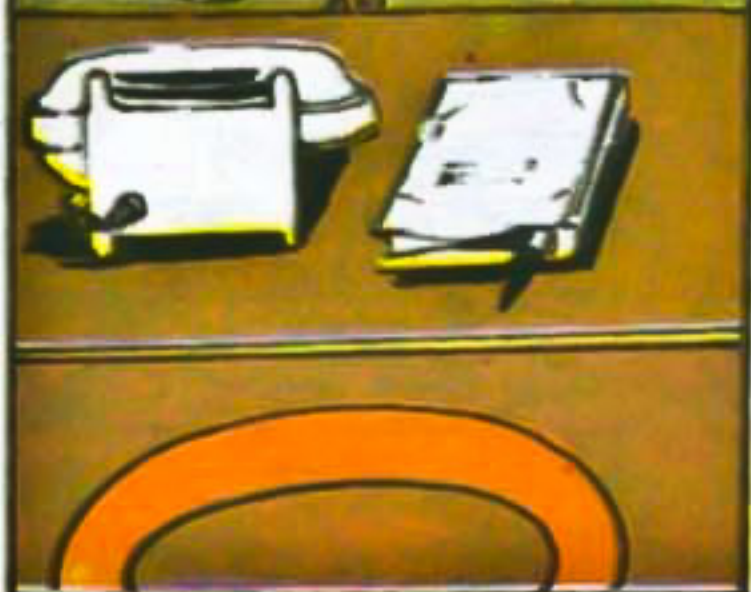
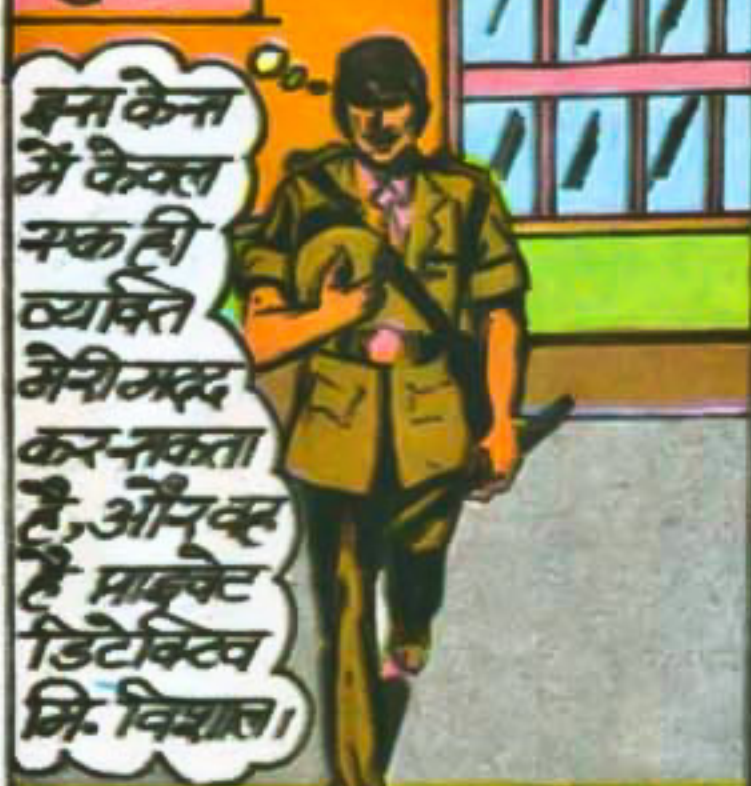
इन्स्पेक्टर गिरिनाराज को
लेकर अपने बंगले पहुंचा

बैठे। यहां तुम आराम से
रह सकते हो। कल तक
मैं और इन्तजाम कर
दूंगा।



धन्यवाद
इन्स्पेक्टर।

एक ही परिवार में एक के बाद
एक चार हत्याएं होने के
कारण इन्स्पेक्टर नमण भी बहुत
चिन्तित था। उसे अभी तक
कोई भी सुराग नहीं मिल पाया
था जिससे वह हत्याएं तक पहुंच
पाता। सारी रात वह बिस्तर पर
पड़ा कनवर्टे बदलता रहा।
सुबह...



फोन पर विशाल
से सम्बन्ध स्थापित
होते ही वह बोला

हेलो विशाल मैं इन्स्पेक्टर
नमण बोल रहा हूँ। कृपया
तुम तुरन्त यहां चले
आओ।



क्या बात है
इन्स्पेक्टर आज
हमारी उद्द कैसे
आ गई?



इस वक्त मुझे
पुछानी एक केस में
समस्त जानकारी है। क्या,
तुम आ सकते हो?

अब,
अगर बात
क्या है?



राज कॉमिक्स



इन्स्पेक्टर रमण ने विनोद को अब तक घटी सभी घटनाओं से संक्षेप में अवगत कराया।



मामला वाकई सीरियस है। ठीक है! तो फिर मैं आज रात ही की गाड़ी से तुम्हारी ओर निकल रहा हूँ।

तो फिर सुनो, तुम्हें बिल्कुल गुप्त रूप से यहां आना है। इस केस की फाइल व कुछ जरूरी बातें मैं तुम्हें एक स्टेशन पहले ही तुम्हारे डिब्बे में आकर बता दूंगा। तुम मुझे ... लखीमपुर स्टेशन पर डिब्बे के दरवाजे के बाहर खड़े मिलना।



औ.कै. वीन्स!

सुबह चार बजे गाड़ी लखीमपुर पहुंचती थी रमण कुछ जल्दी पहुंच गया था।



चार बजने ही वाले हैं।

निश्चित समय पर विशाल वहां पहुंच गया।



हैलो विशाल कैसे हो?

अच्छा हूँ, मगर तुम काफी बदल गए हो?



हा...हा...हा... आओ अन्दर चलकर बातें करते हैं। यह बंजन पानी के लिए काफी देर तक रुकता है।

चलो।



खूनी हवेली का रहस्य



भीतर...

हां, अब बताओ...
वह सब क्या
चक्कर है?

यह उसकेस
की फाइल है। पढ़ते
ही सब कुछ मालूम
हो जाना।



फाइल
पढ़ने के
बाद वह
बोला-

इसका मतलब है,
ठाकुर पन्निम का हत्यारा
अब गिरिराज का भी कत्ल
करने की कोशिश कर
सकता है।

हां, लेकिन फिलहाल...
वह मेरे बंगले में सुरक्षित है।



यह बाद में
बताऊंगा। पहले
तुम बताओ, हां या
ना।

यहां
मगर...
किनालिस

इंस्पेक्टर नमण,
क्या तुम किसी बहाने
गिरिराज को मुझसे यहां
मिलवा सकते हो... कौतिल
से दिखा कर...



मिलवा
देंगे भाई।



तो फिर यह
काम तुम जल्दी ही कर
दो। अभी मैं यहां ही
उतरता हूँ। कल नौ बजे
सुबह मैं उसे यहीं पर
मिलूंगा।

तुम्हारी योजना तो
मेरी समझ में नहीं आई,
किन्तु मैं वहीं करूंगा जो
तुम कहोगे।



राज कॉमिक्स



उधर प्रतापगढ़ में इन्स्पेक्टर ने एक योजना तैयार कर ली और गिरिराज को लेकर हवेली पहुंच गया।



देनवो सुरविया... एक व्यक्ति पर हमें शक है। शायद उसे मिस्टर गिरिराज पहचानते हैं, इसलिय मैं इन्हें लेकर शहर जा रहा हूं। शाम से पहले लौट आऊंगा।



लेकिन जैसे ही वे जीप के करीब पहुंचे...

जा चला जा, वरना तू भी नहीं बचेगा।



कौन थी, वह बुद्धिया?

पगली है बेचरि, मैं पहले भी इसे कई बार यहाँ देख चुका हूँ। चलो अब चलें।

रास्ते में इन्स्पेक्टर रमण ने उसे अपनी योजना व डिटेक्टिव विशाल की पहचान भी बता दी।



देनवो लनवीमपुर स्टेशन पर तुम डिटेक्टिव विशाल से मिलोगे फिर अगली गाड़ी से वापिस आओगे। अब से दो घंटे बाद मैं तुम्हें वहीं लेने आऊंगा।

ओ.के. इन्स्पेक्टर!

और फिर ठीक जै बजे-



हैलो मिस्टर गिरिराज।

ओह, आप ही डिटेक्टिव विशाल हैं। आइए अन्दर चलें।



खुली हवेली का रहस्य



देखो गिरिराज, कातिल को पकड़ने के ... लिए मैंने एक स्कीम बनाई है, लेकिन उसके लिए मुझे तुम्हारी मदद की भी आवश्यकता है।

मुझे क्या करना होगा?

इसके बाद डिटेक्टिव विशाल उसे योजना ... समझाने लगा।

योजना सुनाने के बाद...

इस समय तुम्हारी जान को खतरा है। जो मैं कहता हूँ, वही करो।

मगर आप...

तब तक ट्रेन प्रतापगढ़ की तरफ चल पड़ी थी।

जब गाड़ी प्रतापगढ़ पहुंच कर रुकी-

हेली गिरिराज कर्नल विशाल नहीं आया?

वह अगली गाड़ी से आ रहे हैं।

पर स्टेशन से बाहर निकलते ही...

हा...हा...हा... लौट आया तुम। आखिर मौत तुम्हें यहां दुबारा स्वीच हो लार्ड।

क...कौन हो तुम?

मगर बुद्धिया उसका उत्तर देने के लिए वहां रुकी नहीं थी। दोनों जीप में जा बैठे। इन्स्पेक्टर रमण ने जीप आगे बढ़ा दी।

मुझे यह बुद्धिया रहस्यमयी लगती है।

नहीं पगली हैं! हवेली में हुई घटनाओं के कारण ऐसे बोलती हैं।



राज कॉमिक्स



हवेली पहुंच कर रमण ने जीप रोक दी-



इन्स्पेक्टर के जाने के बाद-





खूनी हवेली का रहस्य



सुखिया के जाते
हो गिरिराज अपने
कमरे में जाकर
पलंग पर लेट गया।

वह पागल बुढ़िया...।
क्या, वह वास्तव में पागल
है या फिर कोई और
चक्कर है?



आधी रात के बाद एक जबर्दस्त चीख ने उसकी
नींद तोड़ दी-



लेकिन इससे पहले कि वह दरवाजा खोल कर ऊपर
घुसता। एक व्यक्ति आगे आ टकराया -



गिरिराज उसे देख कर बुरी तरह चौंका-



पंजे वाले व्यक्ति ने एकसक अपने गिर की
टक्कर गिरिराज के चेहरे पर जड़ दी-



और खुद को उसके पंजे से मुक्त बना कर
एक ओर को भागा।



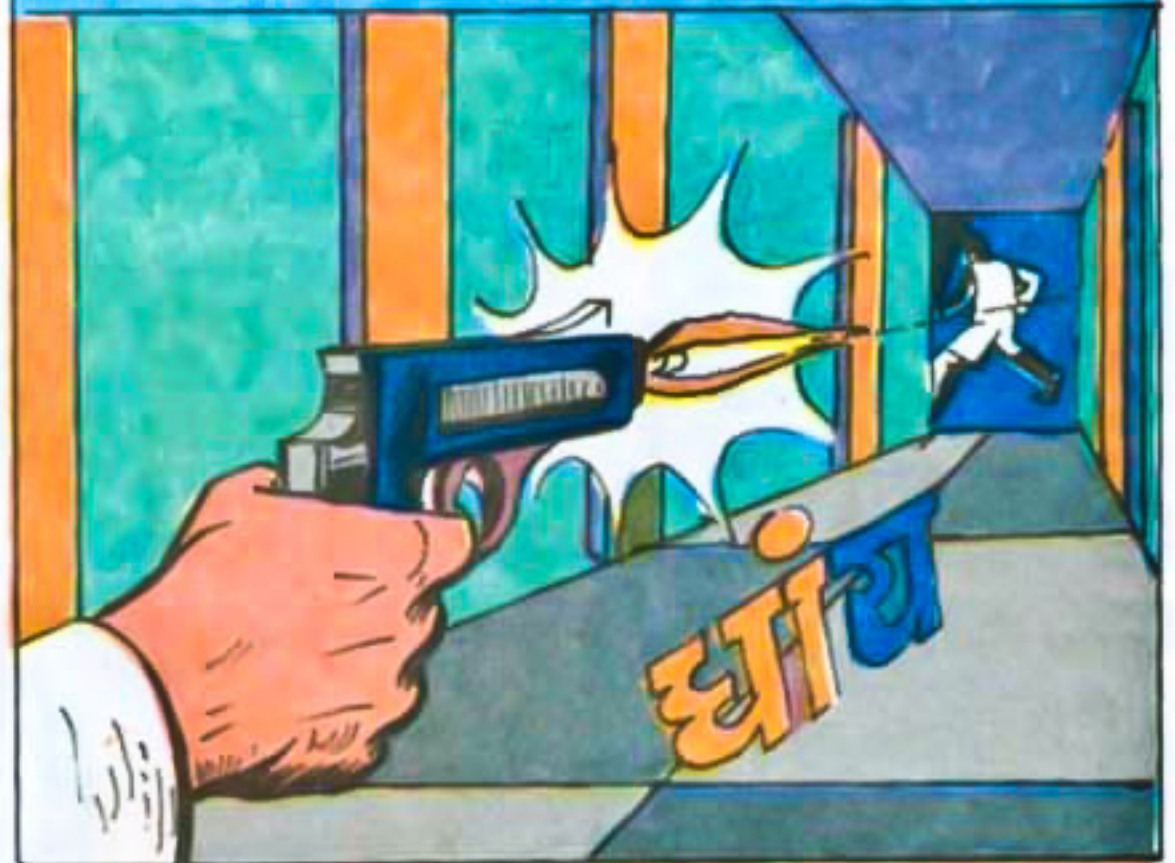
राज कॉमिक्स



गिरिराज त्रिवाल्वर निकाल कर उसके पीछे-पीछे भागा -



मगर जब वह नहीं रुका तो गिरिराज ने फायर कर दिया -



मगर गोली उसका कुल्हाड़ा बिगाड़ सकी थी। वह एक मोड़ पर घूम चुका था और जब गिरिराज वहां पहुंचा...



अब उसने आनापास का पूरा इलाका खोज मारा किन्तु कातिल उसे कहीं दिखाई नहीं दिया -



इतने में हवेली के पहरे पर तेजात सिपाही दौड़े चले आए।





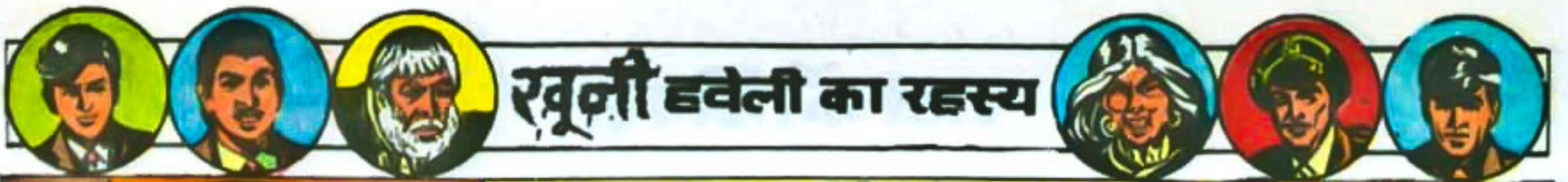
खूनी हवेली का रहस्य





राज कॉमिक्स





खूनी हवेली का रहस्य



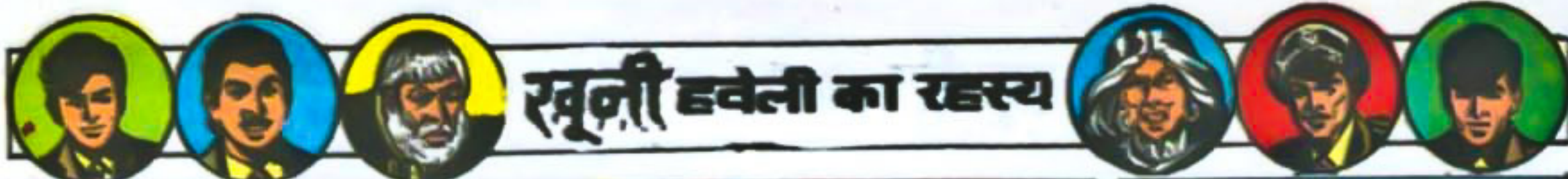
इन्स्पेक्टर नमण ने जैसे ही दरवाजा खोला...





राज कॉमिक्स





खूनी हवेली का रहस्य



तुम भी सावधान रहना।



न जाने क्यों ... वह बुढ़िया मुझे हमसफ़र ही सी लगती। कहीं ये सब कहल ... नहीं नहीं बुढ़िया में इतनी हिम्मत तो नहीं दिखती। आज उससे मिल कर ही कुछ पूछ कर देखता हूँ।

हवेली से पुराने खंडहर अधिक दूर नहीं थे।



सगर अभी उसने खंडहर में कदम ही नखा था कि...

हा हा हा भाग जा... कसबा दू भी नहीं बचेगा। हा हा हा



तुम, मैं जानता हूँ कि तुम पागल नहीं हो। बताओ, तुमने वह स्वांचा क्यों नच नचा है?

हा हा हा... अपनी जान की सलाह तो चाहता है तो शस्त्र छोड़ कर भाग जा करना नहीं बचेगा हा हा हा



जब तक अपने भाइयों तथा पिताजी के हत्यारों को फांसी पर झूलता हुआ न देख लूँ, मैं यह हवेली छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगा।



एकानक किसी व्यक्ति को वहां से भागते देख वह बुरी तरह से चौंक कर उसके पीछे लपका -





खूनी हवेली का रहस्य



उसने सुखिया की हवेली भेज दिया और खुद पुलिस स्टेशन जा पहुंचा-



अरे आप! कुछ देर पहले तो हम मिले थे?

रुक जकरी काम याद आ गया था इसलिय चला आया।



कैसा काम? मिस्टर गिरिनाराज?

मुझे आज से पच्चीस साल पहले की उस घटना का ब्यौना चाहिए, जिसमें पिताजी के खिलाफ कोई रिपोर्ट बर्त्यादि दर्ज की गई है।

मैं समझा नहीं?



उस भगड़े के बाद से सुखिया ने उस औरत को इस गांव में नहीं देखा। पुरानी रिपोर्ट्स देख कर मैं जानना चाहता हूं कि कहीं उस औरत ने पिताजी के खिलाफ कोई रिपोर्ट आदि तो नहीं लिखवाई थी...



और अगर लिखवाई थी तो क्यों... क्या उसे न्याय मिला था?

इससे क्या होगा?



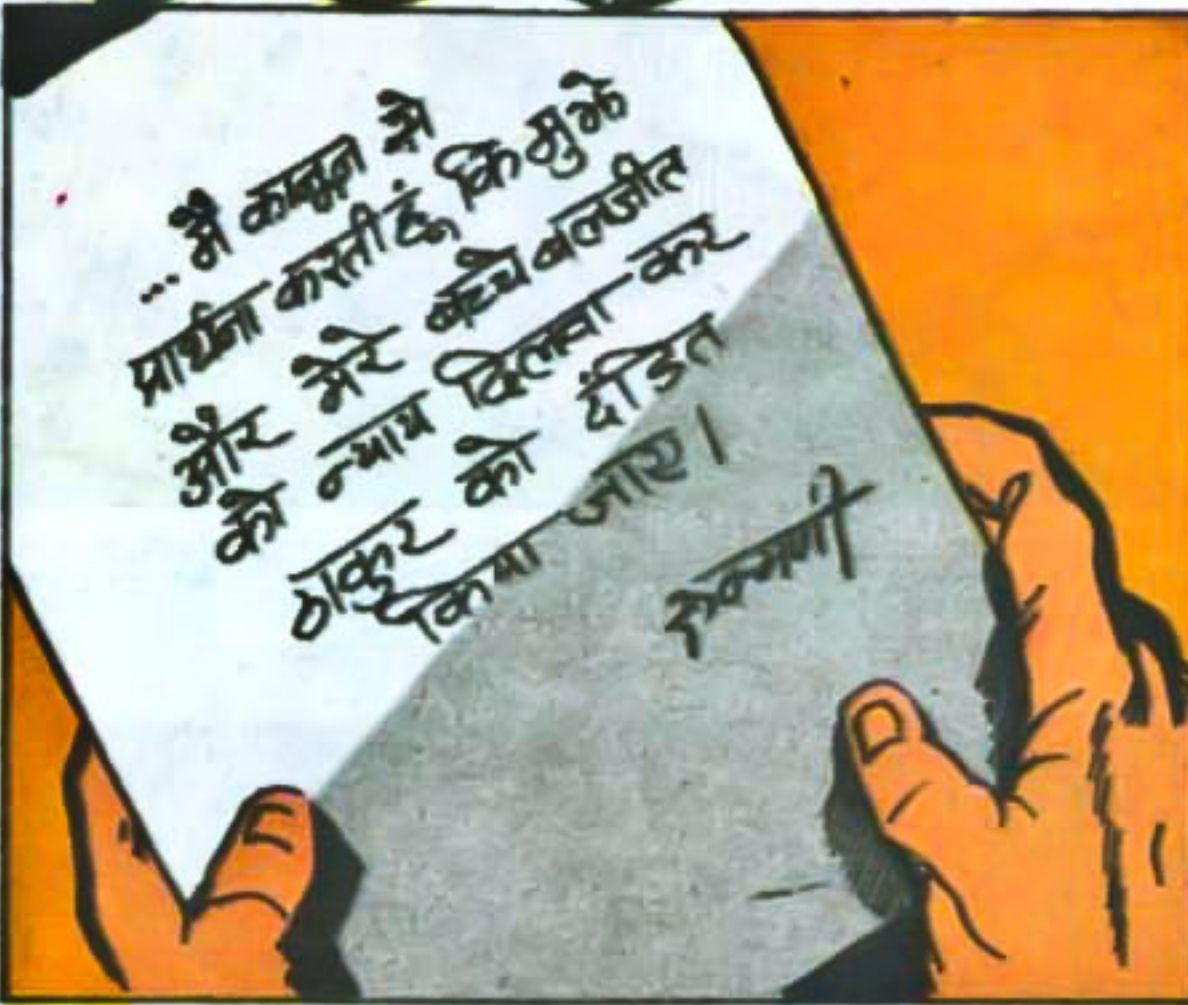
यह मैं समय आने पर बताऊंगा। पहले आपके बताइय, काम होगा या नहीं।

पच्चीस साल पहले के रिकॉर्ड में से एक रेप्टी रिपोर्ट को ढूंढ निकालना नेत के डेयर में मैं सुद्धि... निकालने के बराबर होगा, मिस्टर गिरिनाराज।



राज कॉमिक्स







राज कॉमिक्स

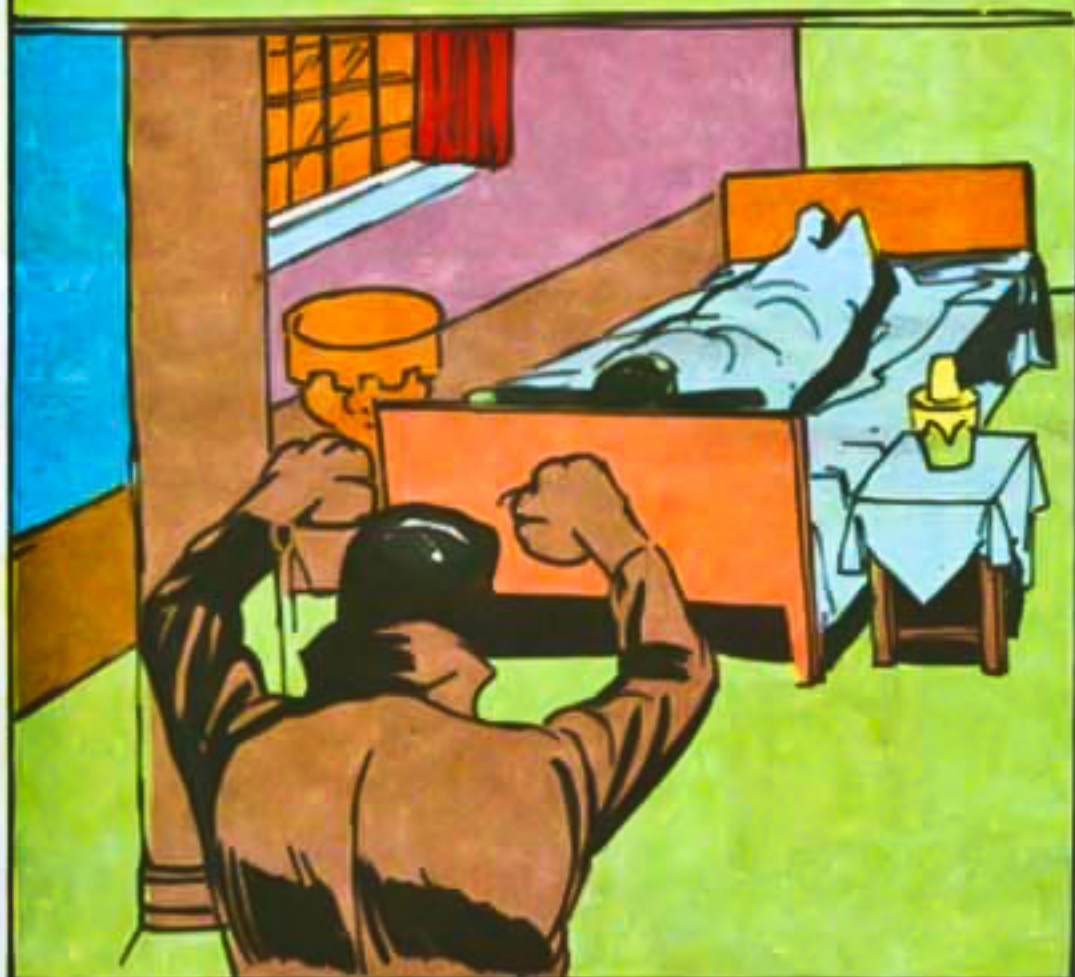


उसी रात...

आज रात मुझे सर्तक रहना होगा?

गिरिराज का अनुमान बिल्कुल ठीक था-

एक भयानक आदमी सौर हुय गिरिराज के पास पहुंचा और झपट कर उसका गला दबाने लगा-



मगर गिरिराज के जिस्म में कोई हरकत नहीं हुई। यह देख वह भयानक व्यक्ति बुरी तरह चौंक पड़ा-

लेकिन हकीकत यह थी।





खूनी हवेली का रहस्य



ठीक उसी पल



अगले ही पल उसने हाथ में पकड़ा पुतला गिरिराज पर उछाल दिया-



इसी के साथ उस भयानक व्यक्ति ने वहां से भागना चाहा मगर...





राज कॉमिक्स



फिर गिरिराज उस पर टूट पड़ा



गिरिराज ने सर की टक्कर का वार किया—



लेकिन जल्दी ही वह भयानक शक्ल-सूरत वाला इन्सान सम्भल गया और...



मौका देख कर वह पुनः भागा परन्तु गिरिराज ने अड़गली लगा दी—





खूनी हवेली का रहस्य



उसके बाद गिरिराज ने उसे सम्भलने का कोई अवसर नहीं दिया। शीघ्र ही वह बेदम हो गया।



तभी बाहर कदमों की आहटें सुनाई दी और साथ ही सुखिया की आवाज़ भी-



विशाल ने आगे बढ़ कर दरवाजा खोल दिया-





राज कॉमिक्स



आधे घंटे बाद पुलिस फौरन उस हवेली को चारों ओर से घेर चुकी थी। फिर जब इन्स्पेक्टर रमण हवेली के भीतर पहुंचा तो आगे हैरत के उकल पड़ा-



मन ही मन विशाल की प्रशंसा करने के बाद इन्स्पेक्टर रमण कातिल से मुखवातिब हुआ-





खनी हवेली का रहस्य

अब तक बलजीत समझ चुका था कि कुछ भी छिपाना बेकार है। अतः उसने कहना शुरू किया -





राज कॉमिक्स



कानून के हर दरवाजे की चाबी हमारी तिजोरी में है बेवकूफ ! हम जब चाहें तुम्हारे लिए कानून के दरवाजे बन्द करा सकते हैं और अब हम तुम्हारी सूरत भी नहीं देखना चाहते। चली जाओ इस मनहूस के साथ इस हवेली की हदों से दूर।



फिर क्या हुआ ?

वही... जो ठाकुर साहब ने कहा था। मां की ओर से दायर मुकदमा भूठे गवाहों की गवाहियों और मां पर बदचलनी का आरोप लगा कर बन्द करवा दिया गया। मेरी मां मुझे गोद में उठाए दर-दर भटकती रही...



...बचपन से जवान होने तक मैंने कभी मां के होठों पर मुस्कुराहट नहीं देखी थी और फिर एक दिन मैंने अपनी कसम देकर मां के दिल का दुख जान ही लिया। उस दिन से मेरे दिल में ठाकुर स्वामिनारायण की अमानक प्रतिशोध की ज्वाला सुलझ उठी। मैं घर से भाग कर यहां आ गया।



मां नहीं चाहती थी कि मैं ऐसा करूं। अतः वो पागलपन सी मेरे पीछे यहां तक आ गई। तब मैंने उन्हें समझा तो लिया, मगर मां का दिमागी सन्तुलन बिगड़ गया और वे पागल सी बनी सड़कों पर घूमने लगी। रात को रास्तों में पड़ी अपनी मां को ... मैं स्वडहर में उठा लाता था...



मां ने मुझे इस हवेली के भीतर बने गुप्त रास्तों के बारे में बताया था। मैं हत्या करके इन्हीं रास्तों से स्वडहर की ओर भाग निकलता था। पुलिस को गुमराह करने के लिए मैंने इन पंजों का इस्तेमाल किया। /

तुम्हारी मां अब स्वडहर में ही होगी ?

हां !



खूनी हवेली का रहस्य

खंडहर पहुंचते ही...



बुढ़िया के हाथ में कोई पर्चा दबा था। विशाल ने उसे खोल कर पढ़ना शुरू किया-



फिर जब विशाल ने प्रतापगढ़ में हो रहे गिरिनाज के पास पहुंच कर उसे बलजीत के बारे में विस्तार से बताया तो



और हवालात में





राज कॉमिक्स



दूसरे दिन एक साथ चार चिताएं सजाई गईं। अपने भाइयों की चिता के साथ बलजीत की मां की चिता को आग देते हुए गिरिराज एकान्त हो सिसक उठा-

